كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ

जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया[88] और उन के लिये जल्दी न करो[89] गोया वोह जिस दिन

يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ

देखेंगे[90] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है[91] दुन्या में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर येह पहुंचाना है[92] तो कौन

يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ ع

हलाक किये जाएंगे मगर बे हुक्म लोग[93]

ایاتها ٣٨ ﴿٤٧ سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ ٩٥﴾ رکوعاتها ٤

सूरए मुहम्मद मदनिय्या है, इस में अड़तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾ وَ

जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका[2] अल्लाह ने उन के अ़मल बरबाद किये[3] और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया[4] और वोही

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

उन के रब के पास से ह़क़ है अल्लाह ने उन की बुराइयां उतार दीं और उन की ह़ालतें संवार दीं[5] येह इस लिये

الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ

कि काफ़िर बात़िल के पैरव हुए और ईमान वालों ने ह़क़ की पैरवी की जो उन के रब की त़रफ़

88 : अपनी क़ौम की ईज़ा पर। **89 :** अ़ज़ाब त़लब करने में क्यूं कि अ़ज़ाब उन पर ज़रूर नाज़िल होने वाला है। **90 :** अ़ज़ाबे आख़िरत को **91 :** तो उस की दराज़ी और दवाम के सामने दुन्या में ठहरने की मुद्दत को बहुत क़लील समझेंगे और ख़याल करेंगे कि **92 :** या'नी येह कुरआन और वोह हिदायत व बय्यिनात जो इस में हैं येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से तब्लीग़ है। **93 :** जो ईमान व त़ाअ़त से ख़ारिज हैं। **1 :** सूरए मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़ और अड़तीस आयतें और पांच सो अठावन कलिमे, दो हज़ार चार सो पछत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी जो लोग ख़ुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्हों ने इस्लाम से रोका **3 :** जो कुछ भी उन्हों ने किये हों ख़्वाह भूकों को खिलाया हो या असीरों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदे ह़राम या'नी ख़ानए का'बा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो सब बरबाद हुई, आख़िरत में इस का कुछ सवाब नहीं। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि मुराद येह है कि कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये जो मक्र सोचे थे और ह़ीले बनाए थे अल्लाह तआ़ला ने उन के वोह तमाम काम बात़िल कर दिये। **4 :** या'नी कुरआने पाक **5 :** उमूरे दीन में तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर और दुन्या में उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल

www.dawateislami.net

رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ

से है[6] अल्लाह लोगों से उन के अह्वाल यूंही बयान फ़रमाता है[7] तो जब काफ़िरों से तुम्हारा

كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ

सामना हो[8] तो गरदनें मारना है[9] यहां तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो[10] तो मज़्बूत बांधो

فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ؕۛ وَلَوْ مع ١٣

फिर इस के बा'द चाहे एहसान कर के छोड़ दो चाहे फ़िद्या ले लो[11] यहां तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे[12] बात येह है और अल्लाह

يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَ لٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ

चाहता तो आप ही उन से बदला लेता[13] मगर इस लिये[14] कि तुम में एक को दूसरे से जांचे[15] और जो

قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤ سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ

अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह हरगिज़ उन के अ़मल ज़ाएअ़ न फ़रमाएगा[16] जल्द उन्हें राह देगा[17] और उन का काम

بَالَهُمْ ۝٥ۚ وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ

बना देगा और उन्हें जन्नत में ले जाएगा उन्हें उस की पहचान करा दी है[18] ऐ ईमान वालो अगर

تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा[19] और तुम्हारे क़दम जमा देगा[20] और जिन्हों ने कुफ़्र किया

فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ

तो उन पर तबाही पड़े और अल्लाह उन के आ'माल बरबाद करे येह इस लिये कि उन्हें ना गवार हुवा जो अल्लाह ने उतारा[21]

उन की मदद फ़रमा कर। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि उन के अय्यामे हयात में उन की हिफ़ाज़त फ़रमा कर कि उन से इस्यां वाक़ेअ़ न हो। **6 :** या'नी कुरआन शरीफ़। **7 :** या'नी फ़रीक़ैन के कि काफ़िरों के अ़मल अकारत और ईमानदारों की लग़्ज़िशें भी मग़्फ़ूर। **8 :** या'नी जंग हो **9 :** या'नी उन को क़त्ल करो **10 :** या'नी कसरत से क़त्ल कर चुको और बाक़ी मांदों को क़ैद करने का मौक़अ़ आ जाए **11 :** दोनों बातों का इख़्तियार है। **मस्अला :** मुश्रिकीन के असीरों का हुक्म हमारे नज़्दीक येह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या मम्लूक बना लिया जाए और एहसानन छोड़ना और फ़िदया लेना जो इस आयत में मज़्कूर है वोह सूरए बराअत की आयत ''اُقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ'' से मन्सूख़ हो गया। **12 :** या'नी जंग ख़त्म हो जाए इस तरह कि मुश्रिकीन इताअ़त क़बूल करें और इस्लाम लाएं। **13 :** बिग़ैर क़िताल के उन्हें ज़मीन में धंसा कर या उन पर पथ्थर बरसा कर या और किसी तरह **14 :** तुम्हें क़िताल का हुक्म दिया **15 :** क़िताल में ताकि मुसल्मान मक़्तूल सवाब पाएं और काफ़िर अ़ज़ाब। **16 :** उन के आ'माल का सवाब पूरा पूरा देगा। **शाने नुज़ूल :** येह आयत रोज़े उहुद नाज़िल हुई जब कि मुसल्मान ज़ियादा मक़्तूल व मजरूह हुए। **17 :** दरजाते आलियात की तरफ़। **18 :** वोह मनाज़िले जन्नत में नौ वारिद ना आश्ना की तरह न पहुंचेंगे जो किसी मक़ाम पर जाता है तो उस को हर चीज़ के दरयाफ़्त करने की हाजत दरपेश होती है, बल्कि वोह वाक़िफ़ काराना दाख़िल होंगे अपने मनाज़िल और मसाकिन पहचानते होंगे अपनी ज़ौजा और ख़ुद्दाम को जानते होंगे हर चीज़ का मौक़अ़ उन के इल्म में होगा गोया कि वोह हमेशा से यहीं के रहने बसने वाले हैं। **19 :** तुम्हारे दुश्मन के मुक़ाबिल। **20 :** मा'रिकए जंग में और हुज्जते इस्लाम पर और पुल सिरात पर। **21 :** या'नी कुरआने पाक इस लिये कि इस में शहवात व लज़्ज़ात के तर्क और ताआ़त व इबादात में मशक़्क़तें उठाने के अह़काम हैं जो नफ़्स पर शाक़ होते हैं।

www.dawateislami.net

فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ

तो अल्लाह ने उन का किया धरा अकारत किया तो क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उन से

عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠

अगलों का[22] कैसा अन्जाम हुवा अल्लाह ने उन पर तबाही डाली[23] और इन काफ़िरों के लिये भी वैसी कितनी ही हैं[24]

ع ١١ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١

येह[25] इस लिये कि मुसल्मानों का मौला अल्लाह है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

बेशक अल्लाह दाख़िल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ों में जिन के

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ

नीचे नहरें रवां और काफ़िर बरतते हैं और खाते हैं[26] जैसे चौपाए

الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝١٢ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ

खाएं[27] और आग में उन का ठिकाना है और कितने ही शहर कि इस शहर से[28] क़ुव्वत में ज़ियादा थे

قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝١٣ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

जिस ने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया हम ने उन्हें हलाक फ़रमाया तो उन का कोई मददगार नहीं[29] तो क्या जो अपने रब की तरफ़ से

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝١٤

रोशन दलील पर हो[30] उस[31] जैसा होगा जिस के बुरे अ़मल उसे भले दिखाए गए और वोह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चले[32]

22 : या'नी पिछली उम्मतों का **23 :** कि उन्हें और उन की औलाद और उन के अम्वाल को सब को हलाक कर दिया। **24 :** या'नी अगर येह काफ़िर सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान न लाएं तो इन के लिये पहले जैसी बहुत सी तबाहियां हैं। **25 :** या'नी मुसल्मानों का मन्सूर (मदद किया हुवा) होना और काफ़िरों का मक़्हूर (ग़ज़ब किया हुवा) होना **26 :** दुन्या में चन्द रोज़ ग़फ़्लत के साथ, अपने अन्जाम व मआल को फ़रामोश किये हुए **27 :** और उन्हें तमीज़ न हो कि इस खाने के बा'द वोह ज़ब्ह़ किये जाएंगे, येही ह़ाल कुफ़्फ़ार का है जो ग़फ़्लत के साथ दुन्या त़लबी में मश्ग़ूल हैं और आने वाली मुसीबतों का ख़याल भी नहीं करते। **28 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा वालों से **29 :** जो अ़ज़ाब व हलाक से बचा सके। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत की और ग़ार की त़रफ़ तशरीफ़ ले चले तो मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के शहरों में तू अल्लाह तआ़ला को बहुत प्यारा है और अल्लाह तआ़ला के शहरों में तू मुझे बहुत प्यारा है, अगर मुश्रिकीन मुझे न निकालते तो मैं तुझ से न निकलता, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **30 :** और वोह मोमिनीन हैं कि वोह क़ुरआने मो'जिज़ और मो'जिज़ाते नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बुरहाने क़वी से अपने दीन पर यक़ीने कामिल और जज़्मे सादिक़ रखते हैं। **31 :** उस काफ़िर मुश्रिक **32 :** और उन्हों ने कुफ़्र व बुत परस्ती इख़्तियार की, हरगिज़ वोह मोमिन और येह काफ़िर एक से नहीं हो सकते और इन दोनों में कुछ भी निस्बत नहीं।

www.dawateislami.net

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ

अह़वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़ गारों से है उस में ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़े[33] और

اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَ

ऐसे दूध की नहरें हैं जिस का मज़ा न बदला[34] और ऐसी शराब की नहरें हैं जिस के पीने में लज़्ज़त है[35] और

اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَ مَغْفِرَةٌ مِّنْ

ऐसी शह्द की नहरें हैं जो साफ़ किया गया[36] और उन के लिये उस में हर क़िस्म के फल हैं और अपने रब की

رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ

मग़्फ़िरत[37] क्या ऐसे चैन वाले उन के बराबर हो जाएंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे और उन[38] में से बा'ज़ तुम्हारे इर्शाद सुनते हैं[39] यहां तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं[40]

قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ

इल्म वालों से कहते हैं[41] अभी उन्हों ने क्या फ़रमाया[42] येह हैं वोह जिन के दिलों पर अल्लाह ने

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ اتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

मोहर कर दी[43] और अपनी ख़्वाहिशों के ताबेअ़ हुए[44] और जिन्हों ने राह पाई[45] अल्लाह ने उन की हिदायत[46] और ज़ियादा फ़रमाई

وَّ اٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿۱۷﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

और उन की परहेज़ गारी उन्हें अ़ता फ़रमाई[47] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं[48] मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए

33 : या'नी ऐसा लतीफ़ कि न सड़े न उस की बू बदले न उस के ज़ाएक़ा में फ़र्क़ आए। **34 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या के दूध के कि ख़राब हो जाते हैं। **35 :** ख़ालिस लज़्ज़त ही लज़्ज़त न दुन्या की शराबों की त़रह़ उस का ज़ाएक़ा ख़राब न उस में मैल कुचैल न ख़राब चीज़ों की आमेज़िश न वोह सड़ कर बनी न उस के पीने से अ़क़्ल ज़ाइल हो न सर चकराए न ख़ुमार आए न दर्दे सर पैदा हो, येह सब आफ़तें दुन्या ही की शराब में हैं, वहां की शराब इन सब उ़यूब से पाक निहायत लज़ीज़ मुफ़र्रिह़ ख़ुश गवार। **36 :** पैदाइश में या'नी साफ़ ही पैदा किया गया, दुन्या के शह्द की त़रह़ नहीं जो मख्खी के पेट से निकलता है और उस में मोम वग़ैरा की आमेज़िश होती है। **37 :** कि वोह रब उन पर एह़सान फ़रमाता है और उन से राज़ी है और उन पर से तमाम तक्लीफ़ी अह़काम उठा लिये गए, जो चाहें खाएं जितना चाहें खाएं, न ह़िसाब न इ़क़ाब। **38 :** कुफ़्फ़ार **39 :** ख़ुत़्बे वग़ैरा में निहायत बे इल्तिफ़ाती के साथ **40 :** येह मुनाफ़िक़ लोग तो **41 :** या'नी उ़लमाए सह़ाबा से मिस्ल इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मस्ख़रगी (मज़ाक़) के त़ौर पर **42 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने। अल्लाह तआ़ला उन मुनाफ़िक़ों के ह़क़ में फ़रमाता है : **43 :** या'नी जब उन्हों ने ह़क़ का इत्तिबाअ़ तर्क किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन के क़ुलूब को मुर्दा कर दिया। **44 :** और उन्हों ने निफ़ाक़ इख़्तियार किया। **45 :** या'नी वोह अहले ईमान जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का कलाम ग़ौर से सुना और उस से नफ़्अ़ उठाया। **46 :** या'नी बसीरत व इल्म, शर्हे सद्र **47 :** या'नी परहेज़ गारी की तौफ़ीक़ दी और इस पर मदद फ़रमाई या येह मा'ना हैं कि उन्हें परहेज़ गारी की जज़ा दी और इस का सवाब अ़ता फ़रमाया। **48 :** कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन।

www.dawateislami.net

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ

कि इस की अ़लामतें तो आ ही चुकी हैं[49] फिर जब वोह आ जाएगी तो कहां वोह और कहां उन का समझना तो जान लो कि

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ

अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और ऐ महबूब अपने ख़ासों और आ़म मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो[50] और अल्लाह

يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ ع ٢

जानता है दिन को तुम्हारा फिरना[51] और रात को तुम्हारा आराम लेना[52] और मुसल्मान कहते हैं कोई सूरत क्यूं न

سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ

उतारी गई[53] फिर जब कोई पुख़्ता सूरत उतारी गई[54] और उस में जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ

उन्हें जिन के दिलों में बीमारी है[55] कि तुम्हारी त़रफ़[56] उस का देखना देखते हैं जिस पर

الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ ۚ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ قف فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ قف

मुर्दनी छाई हो तो उन के ह़क़ में बेहतर येह था कि फ़रमां बरदारी करते[57] और अच्छी बात कहते फिर जब हुक्म नाफ़िज़ हो चुका[58]

فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ ۚ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ

तो अगर अल्लाह से सच्चे रहते[59] तो उन का भला था तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो

تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ

ज़मीन में फ़साद फैलाओ[60] और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह[61] लोग जिन पर अल्लाह ने

اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى

ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं[62] तो क्या वोह क़ुरआन को सोचते नहीं[63] या बा'ज़े

49 : जिन में से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सते मुबारका और क़मर का शक़ होना है। **50 :** येह इस उम्मत पर अल्लाह तआ़ला का इक्राम है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि इन के लिये मग़्फ़िरत त़लब फ़रमाएं और आप शफ़ीए मक़्बूलुश्शफ़ाअह हैं, इस के बा'द मोमिनीन व ग़ैर मोमिनीन सब से आ़म ख़िताब है। **51 :** अपने अश्ग़ाल (मश्ग़लों) में और मआ़श (रोज़ी) के कामों में। **52 :** या'नी वोह तुम्हारे तमाम अह़वाल का जानने वाला है, उस से कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। **53 शाने नुज़ूल :** मोमिनीन को जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह तआ़ला का बहुत ही शौक़ था, वोह कहते थे कि ऐसी सूरत क्यूं नहीं उतरती जिस में जिहाद का हुक्म हो ताकि हम जिहाद करें, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **54 :** जिस में साफ़ ग़ैर मोह़तमल बयान हो और उस का कोई हुक्म मन्सूख़ होने वाला न हो **55 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को **56 :** परेशान हो कर **57 :** अल्लाह तआ़ला और रसूल की **58 :** और जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया **59 :** ईमान व त़ाअ़त पर क़ाइम रह कर **60 :** रिश्वतें लो, ज़ुल्म करो, आपस में लड़ो, एक दूसरे को क़त्ल करो **61 :** मुफ़्सिद **62 :** कि राहे ह़क़ नहीं देखते। **63 :** जो ह़क़ को पहचानें।

www.dawateislami.net

قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

दिलों पर उन के क़ुफ़्ल लगे हैं[64] बेशक वोह जो अपने पीछे पलट गए[65] बा'द इस के कि हिदायत

تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

उन पर खुल चुकी थी[66] शैतान ने उन्हें फ़रेब दिया[67] और उन्हें दुन्या में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई[68] येह इस लिये कि

قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۖۚ وَاللّٰهُ

उन्हों ने[69] कहा उन लोगों से[70] जिन्हें अल्लाह का उतारा हुवा[71] ना गवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे[72] और अल्लाह

يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ

उन की छुपी हुई जानता है तो कैसा होगा जब फ़िरिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे उन के मुंह

وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ

और उन की पीठें मारते हुए[73] येह इस लिये कि वोह ऐसी बात के ताबेअ़ हुए जिस में अल्लाह की नाराज़ी है[74] और उस की खुशी[75] उन्हें गवारा न हुई

فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ ع ٢ ٧

तो उस ने उन के आ'माल अकारत कर दिये क्या जिन के दिलों में बीमारी है[76] इस घमन्ड में हैं कि

يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ

अल्लाह उन के छुपे बैर (छुपी दुश्मनी) ज़ाहिर न फ़रमाएगा[77] और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन को दिखा दें कि तुम उन की सूरत से पहचान लो[78]

وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ

और ज़रूर तुम उन्हें बात के उस्लूब में पहचान लोगे[79] और अल्लाह तुम्हारे अ़मल जानता है[80] और ज़रूर हम तुम्हें जांचेंगे[81]

64 : कुफ़्र के, कि हक़ बात उन में पहुंचने ही नहीं पाती। **65 :** निफ़ाक़ से। **66 :** और तरीक़े हिदायत वाज़ेह हो चुका था। हज़रते क़तादा ने कहा कि येह कुफ़्फ़ारे अहले किताब का हाल है जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पहचाना और आप की ना'त व सिफ़त अपनी किताब में देखी, फिर बा वुजूद जानने पहचानने के कुफ़्र इख़्तियार किया। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا और ज़ह्हाक व सुद्दी का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ मुराद हैं जो ईमान ला कर कुफ़्र की तरफ़ फिर गए। **67 :** और बुराइयों को उन की नज़र में ऐसा मुज़य्यन किया कि उन्हें अच्छा समझें **68 :** कि अभी बहुत उ़म्र पड़ी है ख़ूब दुन्या के मज़े उठा लो और उन पर शैतान का फ़रेब चल गया। **69 :** या'नी अहले किताब या मुनाफ़िक़ीन ने पोशीदा तौर पर **70 :** या'नी मुश्रिकीन से **71 :** क़ुरआन और अह़कामे दीन **72 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत और हुज़ूर के ख़िलाफ़ उन के दुश्मनों की इमदाद करने में और लोगों को जिहाद से रोकने में। **73 :** लोहे के गुर्ज़ों से **74 :** और वोह बात रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मइ़य्यत में जिहाद को जाने से रोकना और काफ़िरों की मदद करना है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह बात तौरैत के उन मज़ामीन का छुपाना है जिन में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ है। **75 :** ईमान व ताअ़त और मुसल्मानों की मदद और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में हाज़िर होना **76 :** निफ़ाक़ की **77 :** या'नी उन की वोह अ़दावतें जो वोह मोमिनीन के साथ रखते हैं। **78 हदीस :** हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि इस आयत के नाज़िल होने के बा'द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कोई मुनाफ़िक़ मख़्फ़ी न रहा, आप सब को उन की सूरतों से पहचानते थे। **79 :** और वोह अपने ज़मीर का हाल उन से छुपा न सकेंगे

www.dawateislami.net

حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ

यहां तक कि देख लें[82] तुम्हारे जिहाद करने वालों और साबिरों को और तुम्हारी ख़बरें आज़्मा लें[83] बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से[84] रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की बा'द इस के

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

कि हिदायत उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी वोह हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुक़्सान न पहुंचाएंगे और बहुत जल्द अल्लाह उन का किया धरा अकारत कर देगा[85]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

ऐ ईमान वालो अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो[86] और अपने अ़मल बातिल

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا

न करो[87] बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर

وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَ

ही मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा[88] तो तुम सुस्ती न करो[89] और आप सुल्ह़ की त़रफ़ न बुलाओ[90] और

चुनान्चे, इस के बा'द जो मुनाफ़िक़ लब हिलाता था हुज़ूर उस के निफ़ाक़ को उस की बात से और उस के फ़ूहवाए कलाम (अन्दाज़े गुफ़्तगू) से पहचान लेते थे। **फ़ाएदा :** अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को बहुत से वुजूहे इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाए, इन में से सूरत से पहचानना भी है और बात से पहचानना भी। **80 :** या'नी अपने बन्दों के तमाम आ'माल। हर एक को उस के लाइक़ जज़ा देगा। **81 :** आज़्माइश में डालेंगे **82 :** या'नी ज़ाहिर फ़रमा दें **83 :** ताकि ज़ाहिर हो जाए कि त़ाअ़त व इख़्लास के दा'वे में तुम में से कौन अच्छा है। **84 :** उस के बन्दों को **85 :** और वोह सदक़ा वग़ैरा किसी चीज़ का सवाब न पाएंगे क्यूं कि जो काम अल्लाह तआ़ला के लिये न हो उस का सवाब ही क्या। **शाने नुज़ूल :** जंगे बद्र के लिये जब क़ुरैश निकले तो वोह साल क़ह़त़ का था, लश्कर का खाना क़ुरैश के दौलत मन्दों ने नौबत ब नौबत (बारी बारी) अपने ज़िम्मे ले लिया था, मक्कए मुकर्रमा से निकल कर सब से पहला खाना अबू जहल की त़रफ़ से था जिस के लिये इस ने दस ऊंट ज़ब्ह़ किये थे, फिर सफ़्वान ने मक़ामे उ़स्फ़ान में नव ऊंट, फिर सह़ल ने मक़ामे क़दीद में दस, यहां से वोह लोग समुन्दर की त़रफ़ फिर गए और रस्ता गुम हो गया, एक दिन ठहरे वहां शैबा की त़रफ़ से खाना हुवा नव ऊंट ज़ब्ह़ हुए फिर मक़ामे अब्वा में पहुंचे, वहां मुक़य्यस जुमह़ी ने नव ऊंट ज़ब्ह़ किये। ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की त़रफ़ से भी दा'वत हुई उस वक़्त तक आप मुशर्रफ़ ब इस्लाम न हुए थे, आप की त़रफ़ से दस ऊंट ज़ब्ह़ किये गए, फिर ह़ारिस की त़रफ़ से नव और अबुल बख़्तरी की त़रफ़ से बद्र के चश्मे पर दस ऊंट। इन खाना देने वालों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **86 :** या'नी ईमान व त़ाअ़त पर क़ाइम रहो **87 :** रिया या निफ़ाक़ से। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोगों का ख़याल था कि जैसे शिर्क की वज्ह से तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं इसी त़रह़ ईमान की बरकत से कोई गुनाह ज़रर नहीं करता, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई और बताया गया कि मोमिन के लिये इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल ज़रूरी है, गुनाहों से बचना लाज़िम है। **मस्अला :** इस आयत में अ़मल के बातिल करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई तो आदमी जो अ़मल शुरूअ़ करे ख़्वाह वोह नफ़्ल ही हो नमाज़ या रोज़ा या और कोई लाज़िम है कि उस को बातिल न करे। **88 शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले क़लीब के ह़क़ में नाज़िल हुई, क़लीब बद्र में एक कूंवां है जिस में मक़्तूले कुफ़्फ़ार डाले गए थे, अबू जहल और उस के साथी, और हुक्म आयत का हर काफ़िर के लिये आ़म है जो कुफ़्र पर मरा हो अल्लाह तआ़ला उस की मग़्फ़िरत न फ़रमाएगा, इस के बा'द अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है और हुक्म में तमाम मुसल्मान शामिल हैं। **89 :** या'नी दुश्मन के मुक़ाबिल में कमज़ोरी न दिखाओ **90 :** कुफ़्फ़ार को। क़ुरत़ुबी में है कि इस आयत के हुक्म में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ ने कहा कि येह आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا" की नासिख़ है क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने मुसल्मानों के सुल्ह़ की त़रफ़ माइल होने को मन्अ़ फ़रमाया जब कि सुल्ह़ की ह़ाजत न हो और बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि येह आयत मन्सूख़ है और आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا"

www.dawateislami.net

أَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيٰوةُ

तुम ही ग़ालिब आओगे और **अल्लाह** तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ तुम्हारे आ'माल में तुम्हें नुक़्सान न देगा[91] दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ

तो येही खेलकूद है[92] और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़ गारी करो तो वोह तुम को तुम्हारे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल

أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

न मांगेगा[93] अगर उन्हें[94] तुम से त़लब करे और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़्ल करोगे और वोह बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा

هَا أَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ ۚ

हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो[95] तो तुम में कोई बुख़्ल करता है

وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ

और जो बुख़्ल करे[96] वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और **अल्लाह** बे नियाज़ है[97] और तुम सब मोह़ताज[98]

وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾ ع

और अगर तुम मुंह फेरो[99] तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे[100]

اٰياتها ٢٩ | ٤٨ سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ ١١١ | ركوعاتها ٤

सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ﴿١﴾ لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़त्ह़ फ़रमा दी[2] ताकि **अल्लाह** तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के

इस की नासिख़ और एक क़ौल येह है कि येह आयत मोह़कम है और दोनों आयतें दो मुख़्तलिफ़ वक़्तों और मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में नाज़िल हुईं और एक क़ौल येह है कि आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا" का हुक्म एक मुअ़य्यन क़ौम के साथ ख़ास है और येह आयत आ़म है कि कुफ़्फ़ार के साथ मुआ़हदा जाइज़ नहीं मगर इन्दज़्ज़रूरत जब कि मुसल्मान ज़ईफ़ हों और मुक़ाबला न कर सकें। **91 :** तुम्हें आ'माल का पूरा पूरा अज्र अ़ता फ़रमाएगा। **92 :** निहायत जल्द गुज़रने वाली और इस में मशग़ूल होना कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। **93 :** हां राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म देगा ताकि तुम्हें इस का सवाब मिले। **94 :** या'नी अम्वाल को **95 :** जहां ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है। **96 :** सदक़ा देने और फ़र्ज़ अदा करने में। **97 :** तुम्हारे सदक़ात और त़ाआ़त से **98 :** उस के फ़ज़्लो रह़मत के। **99 :** उस की और उस के रसूल की इत़ाअ़त से **100 :** बल्कि निहायत मुत़ीओ फ़रमां बरदार होंगे। **1 :** सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़, उन्तीस आयतें, पांच सो अड़सठ कलिमे, दो हज़ार पांच सो उन्सठ ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** "اِنَّا فَتَحْنَا" हुदैबिया से वापस होते हुए हुज़ूर पर नाज़िल हुई, हुज़ूर को इस के नाज़िल होने से बहुत ख़ुशी ह़ासिल हुई और सह़ाबा ने हुज़ूर को मुबारक बादें दीं। (بخاری و مسلم و ترمذی) हुदैबिया

www.dawateislami.net